शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्मृति के साथ विस्मृति का महत्त्व : आचार्य महाप्रज्ञ

डॉ. अमिता जैन
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं, नागौर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

व्यक्तित्व के निर्माण में स्मृति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्मृति ही वर्तमान को अतीत से प्रेरणा ग्रहण करना सिखाती है। शिक्षण पद्धति में स्मृति की उपादेयता निर्विवाद है तो विस्मृति भी उपेक्षा योग्य नहीं है अन्यथा स्मृति भार से बोझिल मनुष्य भावी योजनाओं को मूर्त रूप नहीं दे पायेगा। मान्यता है कि स्मृति की अपेक्षा विस्मृति की उपादेयता रंचमात्र भी कम नहीं है। विस्मृति न हो तो दिनोंदिन प्राप्त अनुभवों की भीड़ हो जायेगी और नये अनुभवों के लिए स्थान ही नहीं बचेगा। अतः आवश्यक एवं उपादेय अंश ही चेतन मन में स्मृति रूप में रहता है। अपशिष्ट अंश अवचेतन मन में जमा हो जाता है।

मुख्य शब्द - *स्मृति, विस्मृति, रोग-प्रतिरोधक शक्ति, मनोबल*

प्रस्तावना

बोध ग्रहण चाहे किसी भी साधन से हुआ हो चाहे जिस उपकरण की सहायता ली गई हो ज्ञान के अग्रिम सोपानों में उनकी उपादेयता नगण्य हो जाती है। बहुधा ये उपादान विस्मृत हो जाते हैं केवल तथ्यपरक ही स्मृति में रह जाता है। जैसे गणना शिक्षण के लिए चाहे कंकडों का आश्रय लिया गया हो अथवा उँगलियों के पोरों का। शिक्षण समाप्ति के बाद योग-वियोग करते समय शिक्षार्थी इन उपादानों का उपयोग नहीं करता अर्थात् ज्ञाता तथा ज्ञान के मध्य जो सम्बन्ध है वही साक्षात् तथा तात्कालिक होता है। तथ्य विषयक प्रत्येक बोधग्रहण निर्दोष होता है। यह तथ्य के अस्तित्व का संकेत तो करता है, भले ही वह बोध क्षण तक ही सीमित हो। शेषांश विस्मृत हो जाता है। ज्ञान को दुरूह और भारयुक्त होने से बचाती है विस्मृति। देशकाल परिस्थिति के अनुरूप ही विस्मृति का समायोजन शिक्षार्थी के लिए उपयोगी व प्रभावकारी सिद्ध होता है। जो व्यक्ति स्मृति के साथ विस्मृति को नहीं जानता, उसका स्वास्थ्य प्रभावित हो जाता है। स्मृति बहुत अच्छी है। यह बहुत आवश्यक माना जाता है, किन्तु इसके साथ-साथ विस्मृति भी होनी चाहिए। इसका कारण यह है कि जीवन में अनेक प्रकार की घटनाएं घटती रहती है, कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल। कभी अनचाही तो कभी मनचाही घटनाएं घटती रहती हैं और उनका सिर पर भार भी होता है। जो व्यक्ति प्रतिकूल घटनाओं की विस्मृति करना नहीं जानता उन्हें भूलना नहीं जानता, उसका शरीर बीमार होता है और मन भी बीमार हो जाता है। वह व्यक्ति ऐसा बीमार होता है कि उसकी बीमारी डॉक्टरों की पकड़ से बाहर हो जाती है। न कोई डाइग्नोसिस का साधन उस बीमारी को पकड़ सकता है, न ही डॉक्टरों की कोई दवा उस पर कारगर हो सकती है। वह बीमारी फिर केवल